फैसिओलोसिस

(यकृत कृमि या यकृत पर्णाभ)

फैसिओलोसिस मुख्यत: गाय, भैंस, भेड़ और बकरीयों को ग्रसित करने वाला परजीवी रोग है

रोग के लक्षण

- जबड़ो के नीचे सूजन (बोतल जबड़ा)
- यकृत शोथ,
- पीलिया
- यकृत तंतुमयता,
- क्षुदा की कमी,
- रक्ताल्पता और दस्त
- उत्पादकता में कमी

जबड़ो के नीचे सूजन

यकृत पर्णाभ

मध्यवर्ती पोषक

घोघें इस पर्णाभ के लिए मध्यवर्ती पोषक का कार्य करते है
जिसमे परजीवी
की कुछ अवस्थाओं का विकास होता है

भारत में **लिमनिया प्रजाति** के घोघें मुख्यत: जिम्मेदार होते है

लिमनिया प्रजाति के घोघें

संक्रमण

परजीवी की संक्रामक अवस्था
जलीय पौधो पर पाई जाती है जहा घोघे पाए जाते है।
ऐसे संक्रमित पौधो को खाने से पशुओं
में इसका संक्रमण हो सकता है।

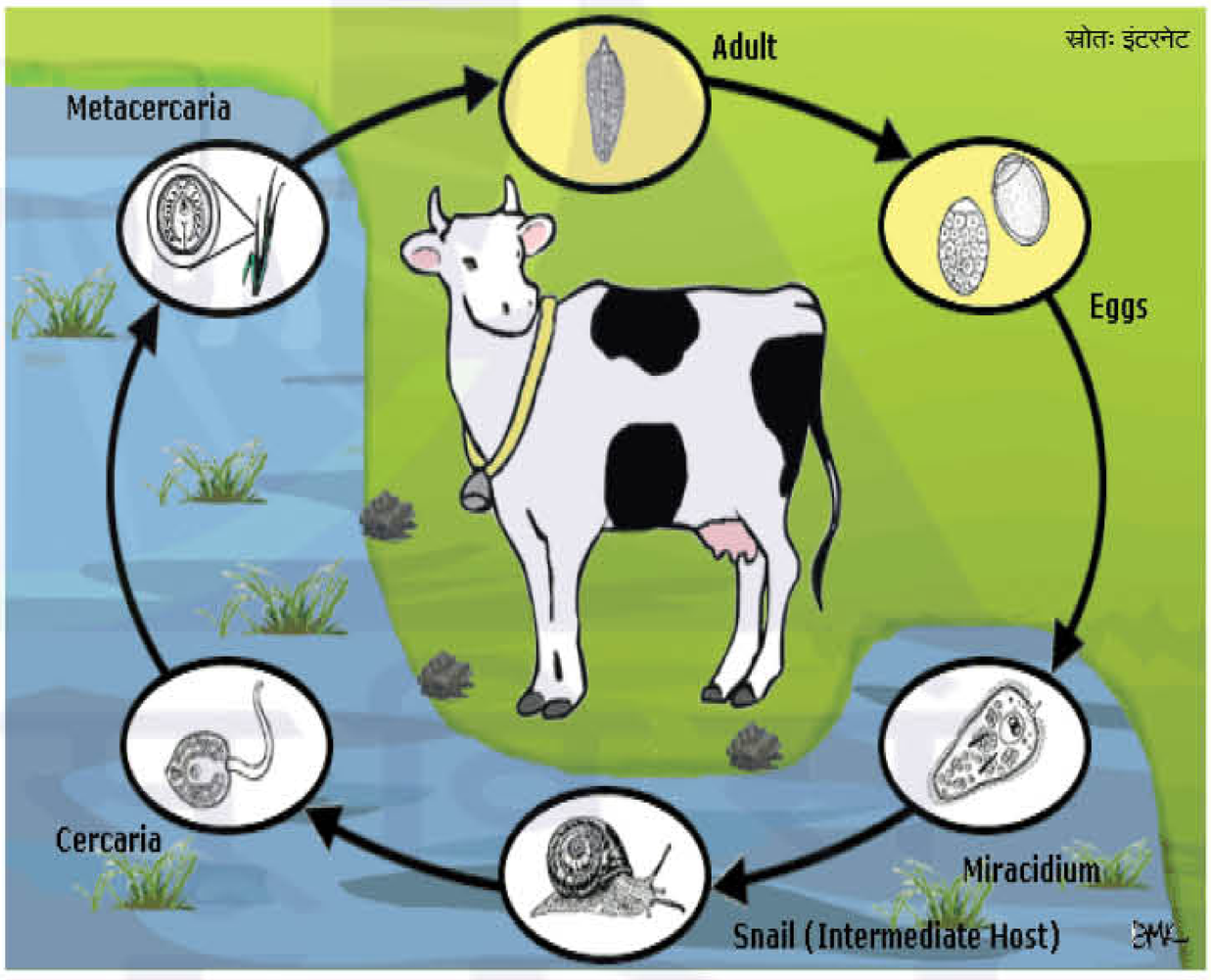

परजीवी का जीवन चक्र

नियंत्रण

- घोघों को नष्ट करने के लिए कापर सल्फेट का उपयोग करे
- जहा तक हो सके पशुओं को जलीय चरागाह के पास न चरने दे
- यदि चारा दलदलीय क्षेत्र से आ रहा हो तो इश्तेमाल से पहले उसका प्रसंस्करण करे जैसे
  - केवल चारे का ऊपरी भाग को ही खिलाये
  - सूर्य प्रकाश में एक सप्ताह सुखाकर, सुखी घास के रूप में दे
  - चारे से साइलेज बनाए

उपचार

- विभिन्न कार्यक्षमता वाली कृमि नाशक दवाईयां बाजार मे उपलब्ध है
- उपचार अपने नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क के बाद ही दे

फोटो स्रोत : इन्टरनेट

भाकृअनुप- राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान
ICAR- National Institute of Veterinary Epidemiology and Disease Informatics
पोस्ट बॉक्स 6450, यलहंका, बेंगलुरु 560064, कर्नाटक
फोन: 080-23093110, 23093111 फैक्स: 080- 23093222, वेबसाईट: www.nivedi.res.in, ईमेल: director.nivedi@icar.gov.in